उईमोक

क्रोशी लोककथाएँ

संकलन एवं लेखन

जमुना बीनी

Scanned by TapScanner

© संकलन एवं लेखन : जमुना बीनी
© चित्र : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

ISBN : 978-81-7479-232-7
प्रथम संस्करण : 2020

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise, without the prior permission of the Author.

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय
भोपाल - 462013
के
सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक
कावेरी बुक्स
4832/24, अंसारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली - 110 002 (भारत)
फोन : 011-2328 8140, 2324 5799
ई-मेल : info@kaveribooks.com
kaveribooks@gmail.com
वेबसाईट : www.kaveribooks.com

टाईप सेटिंग : क्रियेटिव ग्राफिक्स, दिल्ली

भारत में मुद्रित

Scanned by TapScanner

विषय - सूची

प्राक्कथन V

भूमिका

1. उई-मोक
2. मुद ला रअपा
3. यामर
4. युप्पु ला युल्लु
5. ताई बीदा
6. पाग याका
7. मितुर ला मीता
8. मुई ला ताकार
9. यासी ला आपापलअ
10. आबतेन ला सोब
11. यापोम
12. सोत्त
13. आन न्यीम
14. आबतेन ला दीर पचा

Scanned by TapScanner

प्राक्कथन

जमुना बीनी की यह पुस्तक न केवल अरुणाचल अथवा पूर्वोत्तर के साहित्यिक परिदृश्य में वरन् हिंदी साहित्य के विस्तारित फलक पर भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। इस बहुमूल्य रचनात्मक कृति का विचार उस समय पनपा जब जमुना बीनी 'जनजातीय साहित्य महोत्सव 2018' में सक्रियता से भागीदारी कर रही थी। पूर्वोत्तर के वाचिक साहित्य में अभिरुचि रखने वाले पाठक एवं विद्वानों को तो यह ज्ञात होगा ही कि पहली बार सन् 1958 में अंग्रेजी भाषा में वेरियर एल्विन की 'मिथस् ऑफ नेफा' पुस्तक प्रकाशित हुई थी। अरुणाचल प्रदेश की विभिन्न जनजातियों के मौखिक साहित्यिक परम्परा के गहन अध्ययन तथा मनन के लिए आज भी कई विद्वान उक्त पुस्तक का संदर्भ एवं उल्लेख देते हैं।

'उईमोक' अरुणाचल प्रदेश की न्यीशी जनजाति विशेष पर केंद्रित चित्रांकनों से सुसज्जित हिंदी में पहला और ऐतिहासिक प्रयास है। अरुणाचल के जनजातीय साहित्य की अपार संभावनाओं की खोज करते हुए इसे हिंदी के वृहद पाठकवर्ग के सम्मुख लाने के लिए नि:संदेह जमुना बीनी साधुवाद की पात्र है (उनकी निष्ठा, समर्पण एवं सुंदर प्रयास की जितनी भी भूरि-भूरि प्रशंसा की जाये कम है। हम सभी जानते है कि अकादमिक जगत में ईटानगर स्थित राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की वह एक समर्पित टीचर है और सबसे मुख्य बात यह है कि वह हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण दखल रखने वाली पूर्वोत्तर की बहुचर्चित लेखिका भी है।

जेने हाई से मेरी प्रथम भेंट 2018 के अरुणाचल आर्ट एण्ड लिट्रेचर फेस्टिवल के दौरान हुई थी। मैं उनके सृजनात्मक ऊर्जा की खुले मन से प्रशंसा करता हूँ। उनके चित्र प्रत्येक लोककथा की मूल संवेदना के बखूबी चित्रण में सफल रहे है। मुझे विश्वास है कि यह सचित्र पुस्तक पाठकों के लिए रुचिकारक तथा वर्तमान में पूर्वोत्तर आधारित लोकसाहित्य की अन्य पुस्तकों से भिन्न एवं विशेष होगी। यह पुस्तक भारतीय साहित्य की व्यापक परिधि पर स्थापित सीमांत राज्य अरुणाचल प्रदेश की युवा पीढ़ी की सृजनात्मक शक्ति का परिचायक है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय,

Scanned by TapScanner